International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-6 December- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

स्वाधीनता आन्दोलन में सावरकर की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 नरेन्द्र सिंह धारियाल

असिस्टैण्ट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)

एल0एस0एम0रा0स्ना0 महाविद्यालय

पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

सारांश

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महानायकों में से एक दमदार महानायक विनायक दामोदर सावरकर का जन्म महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर ग्राम में 28 मई 1883 को हुआ था। इनके पिता का नाम दामोदर पन्त तथा माता का नाम राधाबाई था। इनके परिवार में चार भाई–बहन थे। सावरकर न केवल स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे अपितु वे एक महान चिंतक, लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी राजनेता भी थे। सावरकर जी की प्रारम्भिक शिक्षा नासिक में हुई थी। सावरकर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे तथा उन्होंने बचपन में ही गीता के श्लोक कंठस्थ कर लिए थे। बचपन से ही अध्यापक सावरकर से अत्यन्त ही खुश रहते थे। इनी दिनों महाराष्ट्र व देश में लोकमान्य तिलक के समाचार पत्र केसरी की भारी धूम थी ये इसे पढ़ते थे जिसके कारण इनके मन में भी क्रांतिकारी विचार आने लगे। केसरी के लेखों से प्रभावित होकर सावरकर ने कविताऐं तथा लेख आदि लिखने प्रारम्भ कर दिये। सावरकर ऐसे पहले भाररतीय थे जिन्होंने वकालत की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। लेकिन उन्होंने अंग्रेज सरकार की वफादारी की शपथ लेने से इन्कार कर दिया था, जिसके कारण उन्हें वकालत की उपाधि प्रदान नहीं की गयी।

मुख्य शब्द –वीर सावरकर की राजनीति, देश से लगाव एवं कटट्र हिन्दूवादी और देश भक्त व महान चिंतक

....

प्रस्तावना

1899 में सावरकर ने ''देशभक्तों का मेला'' नामक एक दल का गठन किया। जबकि 1900 में उन्होंने ''मित्र मेला'' नामक संगठन बनाया, 4 वर्ष बाद यही संगठन ''अभिनव भारत सोसाइटी'' के नाम से सामने आया, इस संगठन का उद्देश्य भारत को पूर्ण राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त कराना था।[1] इसी बीच सावरकर कानून की पढ़ाई करने के लिए लंदन चले गए। वे जून 1906 में पर्शिया नामक जलपोत से लंदन के लिए रवाना हुए। उन्हें विदाई देने के लिए परिवार के सभी सदस्य मित्र एवं बाल गंगाधर तिलक भी गए थे। लंदन प्रस्थान से पूर्व उन्होंने एक गुप्त सभा में कहा था, ''मैं शुत्र के घर जाकर भारतीयों की शक्ति का प्रदर्शन करूंगा।''[2]

लंदन में उनकी भेंट श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुई। लंदन का इंडिया हाउस उनकी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। उनकी योजना नये–नये हथियार खरीद कर भारत भेजने की थी ताकि भारत में सशस्त्र क्रांति की जा सके। वहां रहने वाले अनेक भारतीय मूल के छात्रों को उन्होंने क्रांति के लिए प्रेरित किया। उक्त हाउस में श्याामजी कृष्ण वर्मा के साथ रहने वालों में भाई परमानंद, लाला हरदयाल, ज्ञानचंद वर्मा, मदन लाल धींगरा जैसे क्रांतिकारी भी थे। उनकी गतिविधियां देखकर ब्रिट्रिश पुलिस ने उन्हें 13 मार्च 1990 को गिरफ्तार कर लिया। उन पर भारत में भी मुकदमे चल रहे थे, उन्हें मोरिया नामक पानी के जहाज से भारत लाया जाने लगा। 10 जुलाई 1990 को जब जहाज मोर्सेल्स बंदरगाह पर खड़ा था तो वे शौच के बहाने समुद्र में कूद गये और तैरकर समुद्र तट पर पहुँच गये। उन्होंने स्वयं को फ्रांन्सीसी पुलिसकर्मी के हवाले किया लेकिन तत्कालीन सरकार ने उन्हें फ्रांसीसी सराकार सेले

लिया औरमामला न्यायालय पहुंच गया। जहां उन्हें अंग्रेज शासन के विरूद्ध षड़यंत्र रचने तथा शस्त्र भेजने के अपराध में आजन्म कारावास की सजा सुनाई गई। उनकी सारी सम्पत्ति भी जब्त कर ली गई।[3]

सावरकर को अंग्रेज न्यायाधीश ने एक अन्य मामले में 30 जनवरी को पुनः आजन्म कारावास की सजा सुनाई। इस प्रकार सावरकर को दो आजन्म कारावासों का दण्ड दे दिया गया। सावरकर को जब अंग्रेज न्यायाधीश ने दो आजन्म कारावासों की सजा सुनाई तो उन्होंने कहा कि, ''मुझे बहुत प्रसन्नता है कि ब्रिट्रिश सरकार ने मुझे दो जीवनों का कारावास दंड देकर पुनर्जन्म हिन्दू सिद्धान्त को मान लिया है।'' सावरकर ने ब्रिट्रिश अभिलेखागारों का अध्ययन करके ''1857 का स्वाधीनता संग्राम'' नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा। फिर इसे गुप्त रूप से छपने के लिए भारत भेजा। ब्रिटिश शासन इस ग्रन्थ केलेखक एवं प्रकाशन की सूचना मात्र से ही कांप उठा। तब प्रकाशक ने इसे गुप्त रूप से पेरिस भेजा। वहां भी अंग्रेज सरकार ने इस ग्रन्थ का प्रकाशन नहीं होने दिया, अन्ततः इसका प्रकाशन सन 1909 में हालैण्ड से हुआ। यह आज भी 1857 के स्वाधीनता संग्राम का सबसे विश्वसनीय ऐतिहासिक ग्रन्थ माना जाता है।[4]

सबसे पहले सावरकर ही थे जिन्होंने देश को 1857 की क्रांति की याद फिर से दिलाई और इसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा इसके 50 वर्ष 1907 में पूरे हुए थे, जिस पर सम्पूर्ण भारत में यह होना ये चाहिए था कि पूरा भारत इसे याद करता, इस पर गर्व करता, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ, सिर्फ वीर सावरकर ने इसे याद किया और उन सभी लोगों को शहीद कहा, जो 1857 में अंग्रेजों द्वारा भारतीय मारे गए थे।[5]लंदन में पढ़ाई के साथ ही इंडिया हाउस में उन्होंने 1857 के शहीदों और क्रांतिकारियों को याद करते हुए एक कार्यक्रम भी किया था, जिसके बाद इनकी प्रसिद्ध अत्यन्त हो गई। इससे परेशान होकर कांग्रेस इनके विरुद्व हो गई इसीलिए सावरकर क्यों कांग्रेस को पसंद नहीं आते, क्योंकि सावरकर कांग्रेस के मकसद की पोल खोलते थे और ये बताते थे कि अंग्रेज कांग्रेस के जरिए अपने हित साथ रहे हैं।[6]

प्रारम्भ में कांग्रेस को एओ ह्यूम ने इस मकसद से बनाया था कि 1857 जैसी क्रांति भारत में फिर ना हो इसके बाद कांग्रेस महात्मा गांधी की पार्टी बन गई, और महात्मा गांधी ने कांग्रेस को आजादी की लड़ाई का मंच बनाया, लेकिन आजादी के बाद कांग्रेस जवाहर लाल नेहरू की पार्टी बन गई, और नेहरू के बाद कांग्रेस पूरी तरह से उनके परिवार की पार्टी बन गई।[7]सावरकर भले ही कांग्रेस को पसंद नहीं आते, भले ही सावरकर को भारत रत्न देने की मांग पर कांग्रेस राजनीति करती है, लेकिन सच ये भी है कि एक वक्त पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सावरकर को वीर योद्धा बताया था उनके नाम पर डाक टिकट भी जारी किया गया था। इतिहासकार विक्रम संपत के अनुसार हमारे देश में कई ऐसे लोग हैं जिन्हें वीर सावरकर का नाम अच्छा नहीं लगता वो सावरकर को अपमानित करते रहते हैं, ऐसे लोग सावरकर के बारे में दुष्प्रचार करके अपना एजेंडा चलाते हैं, लेकिन इन्हें पता नहीं कि सावरकर सदियों में कोई एक होता है।[8]

भारत की आजादी की लड़ाई में सावरकर पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने अंग्रेजों का विरोध करने के लिए विदेशी कपड़ों की होली जलानी शुरू की थी, ये वर्ष 1905 था, तब सावरकर पुणे के Fergusson College में पढ़ते थे, इन घटना के बाद सावरकर को कॉलेज से निकाल दिया गया था, और उन पर 10 रुपये का फाइन भी लगाया गया था। ये वो वक्त था, जब महात्मा गांधी भी विदेश से भारत लौटकर नहीं आए थे।[9]

सवरकर के बारे में तीसरी बड़ी बात यह है कि वो पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने 1857 की लड़ाई को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा था नही ंतो 1857 की लड़ाई को सिपाही विद्रोह ही समझा जाता था। लेकिन सावरकर ने इसे आजादी की पहली लड़ाई बताकर पूरे देश को गर्व से भर दिया था।[10]

मार्च 1910 में सावरकर को ब्रिट्रिश सरकार के खिलाफ हिंसा और युद्ध भड़काने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चलाया गया और वर्ष 1911 में उन्हें अंडमान की जेल में 10 वर्षों तक कालापानी की सजा दी गइ 1693 कमरों वाली इस जेल में कैदियों के रहने की जहग बहुत छोटी हुआ करती थी रोशनी के लिए सिर्फ एक छोटा सा रोशनदान होता था। क्रांतिकारियों को वहां पर तरह–तरह की यातनाऐं दी जाती थीं, उन्हें बेड़ियों से बांधा जाता था। उनसे कोल्हू से तेल निकालने का काम करवाया जाता था।[11]

कैदियों के पैर हमेशा जंजीरों में बंधे रहते थे। उनके लिए चलना–फिरना और नित्य कर्म करना भी मुश्किल होता था। वीर सावरकर ने इतने मुश्किल हालात के बावजूद काल कोठरी की दीवारों पर 8 से 10 हजार पंक्तियां लिखी थीं। उन्होंने कविताऐं लिखने के लिए पत्थर को कलम और जेल की दीवार को कागज की तरह इस्तेमाल किया था।[12]

उद्देश्य

1. अंग्रेज सरकार वीर सावरकर को यातनाऐं देती थी। जबकि भारत की दूसरी जेलों में बंद जवाहरलाल नेहरु व अन्य कांग्रेसी कैदियों को लिखने पढ़ने की सारी सुविधाऐं मिलती थीं। उन्हें रोजाना अखबार भी मिलता था। जिससे उन्हें देश दुनिया की हर एक खबर मिलती थी। इसे आप जेल में VIP ट्रीटमेंट कह सकते हैं। जबकि सावरकर ने जिन यातनाओं को वर्षो सहा, उसे एक दिन भी कोई सहन नहीं कर सकता था।

2. अंडमान की इस जेल के चारों तरफ समुद्र था और यहां की यातनाओं से परेशान होकर कई भारतीय क्रांतिकारियों ने फांसी लगा ली थी। कुछ भारतीय क्रांतिकारियों ने अनशन भी किया था। लेकिन सावरकर ने आत्महत्या और अनशन को गलत रणनीति बताया था।

3. 22 जून 1940 को जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस, वीर सावरकर से मिलने के लिए उनके घर गए थे। करीब तीन घंटे तक दोनों के बीच बातचीत हुई थी। बताया जाता है कि सावरकर ने ही नेताजी से कहा था कि देश को आजाद करवाना है, तो उन्हें देश के बाहर जाकर और सेना बनाकर अंग्रेजों से युद्ध करना होगा। सावरकर की प्रेरणा से अगले वर्ष ही नेताजी अंग्रेजों को चकमा देकर काबुल होते हुए जर्मनी पहुंच गऐ और दो साल के अंदर आजाद हिंद फौज खड़ी कर दी।[14]

हरिंद्र श्रीवास्तव ने वीर सावरकर पर गहन शोध किया है और उन पर 17–18 किताबें लिख चुके हैं, उनके शोध से सावरकर के बारे में ऐसी–ऐसी बातें पता चली है, जिनके बारे में बहुत कम लोगों को मालूम हैं। सावरकर को इस देश में वर्षों तक तिरस्कार के भाव से देखा गया, लेकिन सच ये है कि उनके जैसा दूसरा कोई नहीं था। कवि, क्रांतिकारी, विचारक, समाज सुधारक और देश के सच्चे सपूत के तौर पर सावरकर को उनके दुश्मन भी बड़ी हैसियत से मानते थे।[15]

इन बातों से यही दिखता है कि सावरकर के साथ साजिश की गई थी, जिससे आजादी की लड़ाई में उनके योगदान को बिल्कुल भुला दिया जाए, लेकिन कैसी भी कोशिश हो जाए, सावरकर जैसे देश के नायक भुलाए नहीं जा सकते।[16]

वीरों की फाँसी से विचलित हुए सावरकर

खुदीराम बोस समेत तीन अन्य क्रांतिकारियों को दी गई फांसी से सावरकर बहुत विचलित हुए और उन्होंने इन फाँसियों के लिए जिम्मेदार अधिकारी एडीसी कर्जन वायली से बदला लेने की ठान ली। मदनलाल ढींगरा ने उनकी

इस योजना में जान हथेली पर रखकर शिरकत की। सावरकर ने उन्हें रिवॉल्वर हासिल कराई। एक कार्यक्रम में मौका मिलते ही ढींगरा ने कर्जन के मुंह में पांच गोलियां उतार दी और आत्मसमर्पण कर दिया। इस जानलेवा क्रांतिकारी गतिविधि से अंग्रेज हुकूमत की बुनियाद हिल गई। इस घटना के फलस्वरूप समूचे भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध माहौल बनने लगा।

जब सभा में गूंजी सावरकर की आवाज

इस गोली काण्ड के कुछ दिन बाद ही कुछ अंग्रेज भक्त भारतीयों ने इस घटना की निंदा के लिए लंदन में आगा खां के नेतृत्व में एक सभा आयोजित की। इसमें आगा खां ने कहा कि 'यह सभा आम सहमति से एक स्वर में मदनलाल ढींगरा के कृत्य की निंदा करती है। किंतु इसी बीच एक हुंकार गूंजी, नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता, मे इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ। यह हुंकार थी वीर सावरकर की। इस समय तक आगा खां सावरकर को पहचानते नहीं थे। तब उन्होंने परिचय देने को कहा। सावरकर बोले, जी मेरा नाम विनायक दामोदर सावरकर है और मैं इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं करता हूँ। अंग्रेजों की धरती पर उन्हीं के विरूद्ध हुंकार भरने वाले वे पहले भारतीय थे। अंडमान निकोबार की जेल में सावरकर ने करीब एक दशक यातनापूर्ण कारावास गुजारा। तत्पश्चात माफीनामा लिखकर उन्होंने जेल से मुक्ति पाई। इस कठोर समय में भी कालजयी साहित्य की सावरकर रोजाना नई पंक्तियाँ लिखते थे और उन्हें कंठस्थ करने के बाद मिटाकर फिर नई पंक्तियाँ लिखते थे, यह माफीनामा उन्होंने केवल अपने जीवन की सुरक्षा के लिए ना लिखकर, जेल से बाहर आने का बहाना ढूंढने के लिए लिखा था लेकिन उनके विरोधी इसे अंग्रेज सरकार के प्रति बफादारी मानते है।

जब सावरकर ने दी थी बोस को ये सलाह

याद रहे नज़रबंद सुभाषचंद्र बोस को भारत से बाहर जाकर ब्रिट्रेन के शत्रु देशों से सैनिक सहयोग लेने की सलाह सावरकर ने ही दी थी। बोस का देश से पलायन और फिर आजाद हिंद फौज के सेनापति के रूप में सामने आना भी, ऐसा एक बड़ा कारण था। जिसने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश किया था। ऐसे समर्थ राष्ट्रभक्त पर तथाकथित वामपंथी क्षमा–पत्र का सहारा लेकर उनके कद को बौना करने की कोशिश में लगे रहते हैं, जबकि ज्यादातर वामपंथी स्वतंत्रता आंदोलन से ही दूर रहे थे। सावरकर ने वर्ष 1906 से 1910 तब ब्रिटेन में रहकर स्वतंत्रता के लिए जो अलख जगाया और वर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर जो किताब लिखी, उनके इस राष्ट्रीय योगदान के लिए ही उन्हें याद किया जाना चाहिए और आज इन कार्यों का मूल्यांकन करने की परम आवश्यकता है।

इतिहास में नहीं मिला वीरों को सम्मान

भारत देश और देश के नायकों का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि वर्ष 1947 में स्वतंत्र राष्ट्र के अस्तित्व में आने के बावजूद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास अंग्रेज शासकों की मानसिकता से लिखा गया। इतना ही नहीं, वामपंथी इतिहासकारों ने आक्रांताओं को महिमामंडित किया और भारत के मूल निवासी आर्यो को हमलावर बताया। इस दृष्टि से हमें विनायक दामोदर सावरकर पर न केवल तथ्यपरक दृष्टि अपनाने की आवश्यकता है, बल्कि समूचे भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की भी दरकार है, ताकि भारतीय राष्ट्रीय दृष्टिकोण को कायम किया जा सके।
एक ऐसे समय में जब उग्र हिंदू राष्ट्रवाद के एजेंडे पर चलने वाली पार्टी सत्ता में हो, हिंदुत्व और उसके प्रणेता वीडी सावरकर पर विचार करना ज़रूरी लगता है। सावरकर के विचार क्या थे? आज़ादी की लड़ाई में उनका योगदान क्या था? स्वतंत्रता आंदोलन में सावरकर की क्या भूमिका थी, जिसके चलते उन्हें वीर सावरकर की उपधि से नवाज़ा गया, यह सवाल बेहद अहम है।[17]

सावरकर इस हिंदुत्व के जन्मदाता हैं जो हिंदू और मुसलमानों में फूट डालने वाला आज साबित हो रहा है और मुस्लिम लीग के दो राष्ट्रो के सिद्धांत की तरह ही उनके हिंदुत्व ने भी अंग्रेजों की 'बांटो और राज करो' की नीति में सहायता की।[18]

राजनीति शास्त्री और प्रोफेसर शम्सुल इस्लाम लिखते हैं, ''हिंदू राष्ट्रवादी'' शब्द की उत्पत्ति ब्रिट्रिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक ऐतिहासिक संदर्भ में हुई। यह स्वतंत्रता संग्राम मुख्य रूप से एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष भारत के लिए कांग्रेस के नेतृत्व में लड़ा गया था। 'मुस्लिम राष्ट्रवादियों' ने मुस्लिम लीग के बैनर तले और 'हिंदू राष्ट्रवादियों' ने 'हिंदू महासभा' और 'आरएसएस' के बैनर तले इस स्वतंत्रता संग्राम का यह कहकर विरोध किया कि हिंदू और मुस्लिम राष्ट्रवादियों ने अपने औपनिवेशिक आकाओं से हाथ मिला लिया ताकि वे अपनी पसंद के धार्मिक राज्य 'हिन्दुस्तान' या 'हिंदू राष्ट्र' और पाकिस्तान या इस्लामी राष्ट्र हासिल कर सकें।[19]नरेंद्र मोदी के इस साक्षात्कार के बाद प्रोफेसर शम्सुल इस्लाम ने नरेंद्र मोदी के नाम एक खुला ख़त लिखा था, जिसमें वे लिखते हैं, भारत को विभाजित करने में मुस्लिम लीग की भूमिका और इसकी राजनीतिक के विषय में लोग अच्छी तरह परिचित हैं लेकिन मुझे लगता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 'हिंदू राष्ट्रवादियों' ने कैसा घटिया और कुटिल रोल अदा किया इसके विषय में आपकी याददाश्त को ताज़ा करना ज़रूरी है। उस पत्र के मुताबिक, 'हिंदू राष्ट्रवादी' मुस्लिम लीग की तरह ही दो राष्ट्र सिद्धांत में यक़ीन रखते हैं, हिंदुत्व के जन्मदाता, वीडी सावरकर और आरएसएस दोनों की दो राष्ट्र सिद्धांत में साफ–साफ समझ में आने वाली आस्था रही है कि हिंदू और मुस्लिम दो अलग–अगल राष्ट्र हैं, मुहम्मद अली जिन्नाह के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने 1940 में भारत के मुसलमानों के लिए पाकिस्तान की शक्ल में पृथक होमलैंड की मांग का प्रस्ताव पारित किया था, लेकिन सावरकर ने तो उससे काफी पहले, 1937 में ही जब वे अहमदाबाद में हिंदू महासभा के 19वें अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण कर रहे थे, तभी उन्होंने घोषणा कर दी थी कि हिंदू और मुसलमान दो पृथक राष्ट्र है।[20]

जैसा कि प्रधानमंत्री कह चुके हैं कि 'हिंदू राष्ट्रवादी' हूँ। यदि 'हिंदू राष्ट्रवादी' होना गर्व की बात है तो गर्व एक समस्या खड़ी करता है, इसी तरह मुस्लिम राष्ट्रवादी, सिख राष्ट्रवादी, ईसाई राष्ट्रवादी होंगे। इतने सारे राष्ट्रवादी ज़ाहिर है कि भारतीय राष्ट्रवाद के मुक़ाबले कई टुकड़ियाँ में एक ख़तरे के रूप में खड़ी होंगी। इस हिंदू राष्ट्रवाद में गर्व करने जैसा क्या है जो भारत जैसे विविधता वाले राष्ट्र को एक ढर्रे पर ले जाने की वकालत करता है।[21]

वीडी सावरकर ने 1913 में एक याचिका अंग्रेज सरकार के सामने दाख़िल की जिसमें उन्होंने अपने साथ हो रहे तमाम सलूक का ज़िक्र किया और अंत में लिखा, 'हुजूर' मैं आपको फिर से याद दिलाना चाहता हूं कि आप दयालुता दिखाते हुए सज़ा माफ़ी की मेरी 1911 में भेजी गई याचिका पर पुनर्विचार करें और इसे भारत सरकार को फॉरवर्ड करने की अनुशंसा करें। भारतीय राजनीति के ताज़ा घटनाक्रमों और सबको साथ लेकर चलने की सरकार की नीतियों ने संविधानवादी रास्ते को एक बार फिर खोल दिया हैअब भारत और मानवता की भलाई चाहने वाला कोई भी व्यक्ति, अंधा होकर उन कांटों से भरी राहों पर नहीं चलेगा, जैसा कि 1906–07 की नाउम्मीदी और उत्तेजना से भरे वातावरण ने हमें शांति और तरक्की के रास्ते से भटका दिया था।[22]

इसी याचिका के अगले हिस्से में सावरकर और भारतीयों को भी अंग्रेज सरकार के पक्ष में लाने का वादा करते हुए लिखते हैं, इससे भी बढ़कर संविधानवादी रास्ते में मेरा धर्म–परिवर्तन भारत और भारत से बाहर रह रहे उन सभी भटके हुए नौजवानों को सही रास्ते पर लाएगा, जो कभी मुझे अपने पथ–प्रदर्शक के तौर पर देखते थे, मैं भारत सरकार जैसा चाहे, उस रूप में सेवा करने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि जैसे मेरा यह रूपांतरण अंतरात्मा की पुकार है, उसी तरह से मेरा भविष्य का व्यवहार भी होगा। मुझे जेल में रखने से आपको होने वाला फ़ायदा मुझे जेल से रिहा करने से होने वाले होने वाले फ़ायदे की तुलना में कुछ भी नहीं है। जो ताक़तवर है, वहीं दयालु हो सकता है और

एक होनहार पुत्र सरकार के दरवाज़े के अलावा और कहां लौट सकता है, आशा है, अंग्रेज हुजूर मेरी याचनाओं पर दयालुता से विचार करेंगे।

निष्कर्ष

ऐसी गतिविधियों में लिप्त और दया की मांग करता हुआ ऐसा माफ़ीनामा डालने वाले सावरकर वीर कैसे कहे जा सकते हैं, जिन्होंने सुभाषा चंद्र बोस के उलट अंग्रेज़ी फ़ौज के लिए भारतीयों की भर्ती में मदद की? सावरकर का योगदान यही है कि उन्होंने भारत में हिंदुत्व को वह विचारधारा दी जो लोकतंत्र के उलट एक धर्म के वर्चस्व की वकालत करती है। जो निश्चित ही भारत देश के लिये अत्यन्त खतरनाक सिद्ध हो रहा है।

वीर सावरकर विश्वभर के क्रांतिकारियों में अद्वितीय थे। उनका नाम ही भारतीय क्रांतिकारियों के लिए उनका संदेश था, वे एक महान क्रांतिकारी, इतिहासकार, समाज सुधारक, विचारक, चिंतक, साहित्यकार थे। उनकी पुस्तकें क्रांतिकारियों के लिए गीता के समान थीं। उनका जीवन बहुआयामी था।

भारत के इस महान क्रांतिकारी का 26 फरवरी 1966 को निधन हुआ। उनका संपूर्ण जीवन स्वराज्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करते हुए ही बीता। वीर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रिम पंक्ति के सेनानी एवं प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे। दुनिया के वे ऐसे पहले कवि थे जिन्होंने अंडमान के एकांत कारावास में जेल की दीवारों पर कील और कोयले से कविताऐं लिखीं और फिर उन्हें याद किया। इस प्रकार याद की हुई 10 हजार पंक्तियों को उन्होंने जेल से छूटने के बाद पुनः लिखा। निश्चय ही सावरकर एक महान देश प्रेमी और अंग्रेजों के कट्टर शत्रु थे।

संदर्भ

1. Nandy, Ashis (2003) Time warps: The insistent politics of silent and evasive pasts.delhi: Orient Longman.पृ० 71 OCLC 49616949 (https://www.worldcat.org/ocic/49616949) ISBN No.9788178240718
2. Kumar Pramod (1992) Towards Understanding Communalism Chandigarh Centre for Research in Rural and Industrial Developmentपृ० 348 OCLC 27810012 (https://www.worldcat.org/oclc/27810012).ISBN No.9788185835174
3. स्वातंत्र्य वीर सावरकर(https://web.archive.org/web/20090619214822/http:www.savarkar.org/en/about-us(अंग्रेजी में) www.savarkar.org12 – 2007--- (http://www.savarkar.org/en/about-us)से 19 जून 2009 को पुरालेखित अभिगमन तिथि 12 सितंबर 2009 italic or bold markup not allowed in: Publisher (मदद) laccessdate worldcat.org/ocic/49616949= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
4. Savarkar not a freedom fighter, Social reformer. Write dramatist poet, historian, political leader and Philosopher (https://web.archive.org/web/20180205113034https://www.savarkar.org/en/veer-savarkar) मूल (http://www.savarkar.org/en/veer-savarkar) से 5 फ़रवरी 2018 को पुरालेखित अभिगमन तिथि 26 जनवरी 2018
5. गोवा–मुक्ति और सावरकर(https://books.google.con.in/books?kid=L9y2Dwaaqbaj& Printsec=Frontcover#v=onepage&q&f=false)
6. युगपुरुष वीर सावरकर (http://www.chhattisgarhvidhansabha.org/hindi/pressrel/virsavarkar.pdf)
7. वीर सावरकर पर जालस्थल (https://web.archive.org/web/20080131111149/http://apnapanchoo.blogspot.com/2010/02/blog-post-26.html) (अंग्रेजी एवं मराठी में)

8. पहल करने वालों में प्रथम थे सावकर (https://web.archive.org/web/20110728135351/http://apnapanchoo.blogspot.com/2010/02/blog-post-26.html)
9. विनायक दामोदर सावरकर (https://hi.wikiquote.org/wiki/विनायाक दामोदर सावरकर)
10. 1859 का स्वातंत्र्य समर (http://books.google.co.in/books?id=BfmpknlkxRoc&printrse=frontcover#v=onepage&Q&f=false) (गूगल पुस्तक : लेखक विनायक दामोदरसावरकर)
11. दलित मसीहा के रूप में सावरकर (https://web.archive.org/web/20141129123411/https://azadhindostan.blogspost.in/2012/05/blog-post-27.html) (पैट्रिऑट्स फोरम)
12. क्या आप जानते हैं महान क्रांतिकारी वीर सावरकर दलितों के मसीहा थे? (https://web.archive.org/web/20170226234/https://www.theindiapost.com/headline/veer-sawarkar-and-dalit/)
13. गाय को पूजनीय नहीं मानते थे वीर सावरकर, कहते थे सिर्फ एक उपयोगी पशु (https://www.aajtak.in/india/story/veer-savarkar-controversy-india-gandhi.cow-freedom-fighter-659278-2019-05-28)
14. सावरकर, विनायक दामोदर (1929) समग्र सावरकर वाङ्मय भाग–3 पपृ० 71 ''हिन्दुत्वाचे पंचप्राण''
15. सावरकर, विनायक दामोदर (1929) समग्र सावरकर वाङ्मय भाग–3, पृ० 652''माझी जनमाथेप''
16. सावरकर, विनायक दामोदर (1929) समग्र सावरकर वाङ्मय भाग–3, पृ० 898 ''हिन्दुत्वाचे पंचप्राण''
17. सावरकर, विनायक दामोदर (1929) समग्र सावरकर वाङ्मय भाग–3एपृ० 652 ''हिन्दुत्वाचे पंचप्राण''
18. सावरकर, वीर, काला पानी (https://vrihad.com.5200/bs/home.php\bookid=5495) (ए चटीए म), प्रभात प्रकाशन पपृ० 2658 अभिगमन तिथि 20 जून 2001 नामालूम प्राचंल original= की उपेक्षा की गयी। orig-year= सुझाति है) (मदद)
19. गुप्ता, सतीश वीर सावरकर (https://Pustak.org/bs/home.php?bookid=6232) (एचटीएम), पूर्व प्रकाशन पपृ० 19995 अभिगमन तिथि 20 जून 2001 नामालूम प्राचंल origmonth= की उपेक्षा की गयी (मदद) नामालूम प्राचंल origdate= की उपेक्षा की गयी orig-year= सुझावित है) (मदद)
20. हिस्ट्री ऑफ अण्डमान सेल्युलर जेल (https://web.archive.org/web/200701131111037/http://www.andamanvellularjail.org/History.htm#Link8 (अंग्रेजी में) अण्डमान सेल्युलर जेल ऑर्ग मूल (https://wwwandamancellularjail.org/History.htm#Link8) से 13 जनवरी 2007 को पुरोलेखित सन्दर्भ त्रुटि असामान्य टैग है।